अध्याय ५

कच्चा-प्रधान ऐतिहासिक उपन्यास

ऐतिहासिक उपन्यास के पूर्व वित्तेश विज्ञ ऐतिहासिक उपन्यास, सम्प्रदायिक ऐतिहासिक उपन्यास और वातावरण-प्रधान ऐतिहासिक उपन्यास के अतिरिक्त उसकी एक और परिपत्र दृष्टिगोचर होती है, जो उपन्यास की कथाबन्धु के मुख्य पात्र, घटना अथवा वातावरण में है। इसी तथ्य के सम्बन्ध में ऐतिहासिकता के प्रतिकूल नहीं होती। इस परिपत्र-वातर अथवा उपन्यास के हरुँ तत्त्वों में अपनी उपरें और कथना के सहारे ज्ञान कर उनके बृजत के परिवार में स्थान देते हैं। तथापि वे इतना अवयव प्रभाव रखते हैं कि उनकी यह कथना-पृष्ठ की पाठ्य के नाम, चरित-चित्रण और वातावरण के नियम भी में ऐतिहासिकता का स्पष्ट या अभाव अवस्था रखने हेतु हैं। इस प्रकार के उपन्यासों में घटना और पाठ्य के तो मथवालक कथना की ही नाती है, वास्तव ही उसका वातावरण भी ऐतिहासिक प्रभावित नहीं है। उसे फिरोजा-जुकटा ही होता है और वह वर्णित दृष्ट की केवल एक भावना भी देता है। ऐसे ऐतिहासिक उपन्यासों के तत्त्वों का कलात्मक विनियोग पायी जाना गया है। और उनके व्यवस्थ में अपनी नित्य ऐतिहासिक कथना निरूपित करता है। अतः ऐसे उप- न्यासों को "कथना-प्रधान ऐतिहासिक उपन्यास " के नाम से व्याख्यात निरूपित किया जाता है। ऐतिहासिक कथन के अंत में यह अद्वितीय कर आये हैं कि जहाँ उपन्यास का कथामक, उसके पाठ्य और उसका चरित-चित्रण बायद समी प्रायः काल्पनिक हों, और ऐतिहासिक वातावरण का कहाँ आभास मात्र हों, ऐसे उपन्यास ऐतिहासिक कथना की प्रधानता के कारण कथना-प्रधान ऐतिहासिक उपन्यास कहे जा सकते हैं।
इस कोट में रक्षा जाने योग्य, पैतृक आचार्य के विकास-कार का, हिंदी की वास्तव तीन-चार और गुजराती की दो-तीन रचनाएँ ही प्राप्त हैं। विशेषतः दुर्गा के विचार से प्रसिद्ध अख्यात में भेंट प्रतिनिधि रचनाओं को ही अख्यात के आधार के रूप में प्रसारित किया गया है, जिनकी कायमतानुसार युवी इस प्रकार है।

हिंदी के कथन-प्राचीन पैतृक आचार्य के:

1. दिस्याः मशाल : 1949
2. युद्ध का टोला : राफियां रघुवर : 1976

गुजराती के कथन-प्राचीन पैतृक आचार्य के:

1. बाणा नोहमा : रघुनाथ वर्तमान देसाई : 1969
2. कात नरेश : गुजराति आचार्य : 1995

कथावली : हिंदी के कथन-प्राचीन पैतृक आचार्य के:

प्रसिद्ध ग्रन्थ की रचनाओं में "दिस्याः" एक गोदखत्री आचार्य के प्रसिद्ध ग्रन्थ है और उसके पैतृक पृष्ठभूमि पर व्याख्यात और समाचार की प्रकृति और गति का विषय प्रस्तुत करता है। "युद्ध का टोला" दिस्याः की घटना की संभावना के लिए दुर्गा के विचार सम्बन्धी ऐतिहासिक आलोचना की मामला मात्र को व्यक्त करता है। दोनों आचार्य का वर्णन कारण की पृष्ठभूमि पर आधारित है।

"दिस्याः" एक महाकाव्य रचना है। इसमें ऐतिहासिक वैश्विक वातावरण का रंग दिस्याः की कथा प्रस्तुत करता है। सर्वप्रथम पुस्तक दिस्याः की विषयिक में कथा लगाने पर अख्यातित पृष्ठभूमि देखें (दिस्याः के प्रमुख महत्व)
के पास न्याय के लिए जाता है, बहार दोनों परस्पर आकर्षित होते हैं। मद्दर पर केन्द्र के आबोधण पर पुतुलक के युद्ध में जाने है और कोई दिव्या उसे आत्म-सर्वनियम कर देती है, जिससे उसे गर्म रह जाता है। छतिव बाद विक्रमी पुतुलक के वापस आने पर वह उससे विवाह के लिए प्रमाण करती है, फिर उसे पुतुलक की अपेक्षा के लिए निराल देती है, दास-व्यवहारी के इसी में पड़ कर उसके युद्ध-ऩान के बाद वह चक्कर पुतुलक के भाग्य-दासी के रूप में वेदना दी जाती है, पुत्र की रस्सी के लिए, वह दुखित-सौंप की शाश्वत जाती है, वहाँ से निराल हो वह गुणमा में यूद्ध है, वहाँ भी निकली रत्नाकरा दूरारा वह जो हो जाती है और बनत ने वाराणसी का आभास प्राप्त करती है। वह दिव्या की गुण्य स्था है। इसके साथ ही लोगों-पुतुलक एवं दासी छाया तथा दास बाहुल की प्राकृतिक भाषा नी है।

आभारी दोनों क्षमा लें जयादा ख्यात वर्णित है। आभारी उपजन के पुत्र सुदर्शन के देश-निवासिन पर मात के सेनापति पुन्यामिन दे शहायता प्राप्त कर मद्दर में जन्मा-प्राप्त जन्मा राज्य-संघर्ष का केकु भर देखते साम्राज्य ओर गणर ने युद्धम्य की एक क्षेत्र प्रस्तुत करता है, कारण वह मद्दर और दासी की पुरीते ऐतिहासिकस्ता का कोई प्रामाण्य आधार नहीं है। अतः बृत्ति में टेलर ने अपने बहुत से सन्दर्भ एक ऐतिहासिक उदयना मात्र की है।

दिव्या का क्षणांतु वातावरणं प्रसिद्धिं एवं संपर्कित है। क्षणांतु का रोचक ओर सुन्दर पुन्ने लगाए रहने के लिए, टेलर ने कई आकृति ओर मातृत्व दिव्या की बृत्ति की है। यह जनानों के विषयविशेष दृष्टा क्षणांतु का गति-शीर्षक प्राप्त हुई है और उन्हें वाराणसी उन्मेष के साथ-साथ पाठशाला की निर्बलता बुद्धि की भी परिलोकित हाै।
" युद्ध का ठीका " 1000 ईस्वी पूर्व के सिन्धु-कट पर रिस्त एक महानगर श्रेष्ठी माणिक्य ने कृपया आशिष किया है, जिसके द्वारा देस की तत्कालीन शोषण समाज-व्यवस्था और राजनीति का बित्र प्रस्तुत करता है।

" युद्ध का ठीका " की आधिकारिक कथा इस प्रकार है, महानगर के श्रेष्ठी माणिक्य के सीक्ट की सुकृत बारिक ने अपने आवास में ते नाम ने उसकी स्वाभाविक नीतिक विवश्य हो जाती है और उसे अपने पा से छाया ने के चले के पृथी बिल्ला दिखा हो सकती है, पर उसे वो खुली स्पष्ट साधना प्रस्तुत नहीं होता। इतने में जाने के आयुग के निवासित सीक्ट की राजनीती की विपरीत और प्रभाव महानगर में चक्करता के चित्रों जाते हैं, अन्ततः इसके नाम में व्यवस्था होने पर माणिक्य के सैनिक उन पर ध्यान करते हैं, इससे प्रभाव में विद्वेष हो जाता है। माणिक्य अपनी बैठने-भवन के उसे कुछ कर स्वयंप्राप्त बन जाता है। अपनी इस विषय व वर बारिक ने पर व्यापक करने जाता है, विचार इतने में ही सिंह और सर शांतिन के नक-प्लेस में निरन्तर हो जाता है। इसके लाख हैं और अयोग की कथा द्वारा कर सकता व्यसन का भाव करने का निम्नांकन तो जिज्ञासा के बाहर तिलक का निर्माण करता है, तो बारिक की कथा अपनी स्वतंत्रता और स्वाधिकार के बिंदु वंचन का जीवन सफल्प व्यक्त करता है।

प्रायम्य-विश्व-विवाह द्वारा मौद्रन नौद्रों के उत्कृष्ट नारा मे हे इस महानगर की द्रविड रूपसति के कई तथ्य प्राप्त हुए हैं। देश ने प्रस्तुत अवधार में उन तथ्यों के आधार पर अपनी कल्याण के सहारे तत्कालीन बालक्यार की मार्ग की कार्य करने के दिशे महानगर के सम्बद्ध स्थानन्त्रता गिनती लिखकता है और समलकलकालीन भारतीय संस्कृति की परिभाषा की है।
क्षणस्थल में कुलहुक और मनोरमता की युक्ति प्रस्तुत करने के लिए शेष ने कई प्रसंगों और ठोस दृष्टियों की संख्या की है। उसके मनोरम आरंभ के नाब घटनायुक्त आरोपी घटना जाती है और शेष अपने उदाहरण के अनुभु सामाजिक और राजनीतिक स्थिति का विशेषण करते हुए आगे बढ़ता है। इस फुहार के स्पष्ट पर वर्गीय-वालीय रूप के प्रवाह में गत्य्वरोह उत्पन्न करता है, इसके सम्बन्ध पर वथा इंस्टैंट में शिखरीता उम्र आई है। इसके ब्राह्मण स्क्यावतयु आपसिक एवं पुनर्प्रयोजित है।

मुद्राती के कल्याण-प्रधान ऐतिहासिक उपन्यास:

प्रस्तुत वर्ण में प्रकटक रचनाओं में से "बाला जौगण"।

बीं ललन्दी के आरम्भ में विषयाने धीरा के पतितमय जीवन पर धारित है। सारी "कामकाज " अथि-पति की ललन्दी के सहिराज्य के चाकरा वैशिष्ट्य वनस्पति के सामुद्रिक साइड़ की क्षा लिये हुए हैं।

यहां इस वर्ण में प्रकटक रचनाओं के समन्वय में यह स्पष्ट कर देना आवश्यक है कि इन में कल्याण का रूपांतरण ऐतिहासिक लत्यमें ही सम्पूर्ण है, किन्तु लेखक यहां ऐतिहासिकता के प्रतिबंध होते नहीं कहता, वरन् उन्में कल्याण का प्रयोग प्रयोग करता है। अतः ऐतिहासिक लत्यमें सम्पूर्ण होते के उपरान्त भी इन्हें कल्याण प्रधान ऐतिहासिक उपन्यास की कोटि में महण फिर भया है। "बाला जौगण" के विषय में यह स्पष्टीकरण निराल्पा आवश्यक है। कृपणकृत मीरा के नीकत समस्ती प्रायत्न ऐतिहासिक तत्त्व उपन्यास में महण खूब ढांचे गये हैं। किन्तु लेखक मीरा

1. (1) श्री २५ वर्ष देशाई, "बाला जौगण", प्रस्तावका, पृ०
(11) डॉ० श्री ४० वर्ष भ्रमण, मीरा युक्त अवस्था, पृ० ११२ से ११४ तक और पृ० २२३ से २२५
के मत जीवन की लोपन्यासिक रूप प्रदान करने में ऐतिहासिक तथ्यों के अपरांत भी कल्याण का उन्मुख प्रयोग करता है। व्यदिवादी राजनीति परिवार की मीरा का किशोरावस्था में अंग्रेजी व्याकरण के साथ सिखाया के खिचे जाना, जब तक माता-पिता मोहनचंद्र का निधन, उसे भेजा लाने पर मीरा का लघु कल्याण के साथ देहकर्षक रहित विवाह सत्वनी वातावरण का हिमाश्रय करना और खेलमा अपनी कल्याणन्त्र अवस्था में कृष्णाचरण को मीरा-देह-दर्दन आदि प्रकार के विवाह में ऐतिहासिक प्रकतिक्रिया का सर्वथा अभाव और कल्याण का मुक्त प्रयोग है। इसी कारण इसे कल्याण प्रदान ऐतिहासिक उपन्यासों की कौटी में प्रहरण विभा गया है। यदि इसे ऐतिहासिक प्रकतिक्रिया का अभाव न होता, तो यह सम्पन्नत्व ऐतिहासिक उपन्यास की कौटी में रखे जाने सीधे होता। किन्तु प्रायः ध्वनि अवस्था में गुजराती के हरी लोकार्थ राघुसौंदर्य और प्रकृति वर्ण में रचना ही उपन्यास का गया।

काद मैरव भी देखा के कल्याणन्त्र जन्मति २ पर आधारित होने के कारण एवं स्वयं कल्याण के सहारे प्रकृति विवाह जाने के कारण इसी कौटी का अन्वेषण फिस्था गया है।

अंदाया १९६७ में लगा जोगण के मीरा की स्वयं अवस्था में मां के निधन पर कृष्णाचरण दूल्हनी के संसार के कृष्णाचरण-मरित की बारे मुबल्ल है। मरित की तल्लीसम में ही उसके विवाह मौन्य करने पर मैरव के राणा सी. गीत के अलग पुरा भोजनज के साथ उसका विवाह हो जाता है, किन्तु इसी मरित में कोई खिलकौट नहीं आता। अत्यन्त काद के पश्चात मौन के निधन पर राणा विंधसिंह उसे मारने के खिचे खाने और विंध के प्रयोग की विचारवर्ता पर अन्य

१ राघुसौंदर्य जोगण के प्रत्यय विवाह-विवाह के आचार पर
२ काद मैरव, परिवह, पु.१
फ्रिकं नेे निवारित कर देता है। क्योंकि इस आदि दृष्टियों की आँध्र के बाद दूरुर का आकर छेदः के लिए क्षणीय हो जाती है। वाला-जोगणा की इस आदियाकारिक कथा के साथ रैक्स के शिख और मीरा के भल-चंचल कुँवारण के विकृत मानस के विशेषण और उदात्तीवृणा की प्रासंगिक कथा भी विवरण है।

"वाला-जोगणा" की कथा को लेखक ने चार मांगों में विभाजित कर और प्रत्येक में अपने प्रतिस्पर्ध का निर्माण कर उसका श्रेय संगो-जन किया है। कविचुं में रूपकाल, और कुछह तत्वों के निर्माण के लिए लेखक ने कई दुर्दृष्टियों और प्रशंसकों को इसके साथ भी गुण्यसंवर्धन किया है। कई स्थानों पर गुप्त हीरकविताओं का छताच्छिल विशेषण कथा की "गलतीहर" में अवरोध उत्पन्न करता है। इसके तात्पर्य ने यह कथा पुरातीत और पुनःपुनः है।

"काह मेरा" में दोराण्ड की कथा की वस्तुति पर आधारित मौर्य शासन की समाप्ति के बाद सौभाग्य में अलमगर अलमता के राजकुमार कन्कैन और आज़ादी गौरव की कारण ब्राह्मणी सामुदायिक जाति के अभावी नाग वैदिक के रूपों की कथा है। वाराह कई पूर्व नाग दृवरा अलमगर अनुपात में विस्तारशील पूर्ण हृदय कर देते हैं दोनों में ही वैर था।

एक गली खाकों की कथा के अभी पुनःके अभियोग रहने पर यद्यपि यह के आदेशानुसार नाग की अदि उदाहरण की कन्कैन के अपने संशोधन में देने पर नाग और कन्कैन में दुर्थ होता है। कन्कैन बिक्री का हृदय का बदला देने के लिए नाग का विरत था जो के बदराम में लाकर रोशन की प्रतिभा करता है। नाग के कालीग्राम की पुष्पा के लाद सुनाह हाराम होता है, जिसमें कन्कैन विक्री रहता है और नाग के सहानों को अभी ना...
उसके गाढ़े दूर पर आक्रमण करने पहुँचता है, किन्तु नाग की अनुपस्थिति में उसे घबराने से जिस शून्य खाता पर अपनी भूमिका की रक्षा करता है। इससे नाग का श्रद्धालु समाप्त हो जाता है और उसे अपने से सामने की रक्षा के लिए नेत्रों के बाद उसकी प्रतिष्ठा पुरी करवाने के लिए अपनी पुष्कर्ण के अपना सिर फिर यात्रा कर भिड़ देता है।

क्योंकि तैन चावला और नाग लंबाई की मुख्य कथा के लिए आहरण, और सकार भद्दी लगा वल्लिकी और अन्य साहित्य की प्रारंभिक कथायें भी विवरण में है, जो भूमि कथा के साथ हुस्तालु में ने बन्द है। उपस्थित दुर्बल मानव और अन्य कार्यक्रम प्रसंगों की अनुभावना से खेल में ने कथा में रोचकता और दुरुस्तता का ज्योतिषीय विषय निर्धारित किया है। अपनी पुष्कर्ण और प्रजा की रक्षा करने वाले शून्य की अनुभाव के अंत में नाग दुरारा अपना सिर फिर भिड़ देता कर कथा की हृदय धारिसे और मार्शी उज्ज्वलता प्रभाव की है।

कल्पना और निम्नलिखित:

उपस्पष्ट प्रमाणों के साथ आधुनिक अभ्यास करने पर निम्नलिखित विवरण प्रकाश में आते है।

(1) "दिशा" और "शून्य ना ठीका" एवं "शून्य " गाथा मैथव " आधीन भारतीय वर्तमान की कल्पना के भुकंत है। "वाद्य नीर्माण " लोकसंगीत शास्त्री के आरंभ में क्रम-हतियात्री भी वेतन के दौरान गाथा प्रभाव करता है।

(2) उपस्पष्ट प्रभाव दौरे में लेखक के अपने सिद्धांतों के अनुसार ध्वनि और समाज की पारंपरिक रूप से रोचकतापूर्वक अभिव्यक्ति की गई है।
"कार मैरव" में ये लडक समुद्र प्रदेश के निवासियों और उनके शासकों के साहस पूर्ण गायन का रोचक कथन प्रस्तुत करता है। "लाला जोगण" पूर्व निर्देश-प्राप्ति सीरीज की मात्र व रोचक और प्रभावशाली स्वरूप प्रस्तुत करता है।

(१) चरित-चिन्ता:

कथन-प्रमाण, ऐतिहासिक उपन्यास के रचयिता पर विचार करते हुए प्रस्तुत अनुप्रयोग के आरम्भ में यह निर्देशक कर दिया गया है कि इन उपन्यासों के पात्र प्रामाण्य प्रमाणों की कथन-फूडि की देय होती है।

शासनिक रूप में उपन्यास के कथा, पात्र और उसके अवतरण के सम्बन्ध में ऐतिहासिकता की मात्र या प्राप्ति उपन्यास करने के लिये कहीं ऐतिहासिक पात्रों का नामात्मक बहुत ही महत्त्व का अवश्यक नहीं होता है, जिन्हें उपन्यास वें के किसी विषय महत्त्व के अवश्य कोणा सी नहीं होते। इन काश्यपक धारत की वृद्धि में भी खेल इनके नामकरण चरित-चिन्ता और इनके पात्र-प्राप्ति विषय का निर्देश करने में उस वर्तमान अवस्था रहता है कि वे काश्यपक धारत संमाजकता की वृद्धि से सृजन के लिये ऐतिहासिकता के अनुप्रयोग छोड़, पाठक को उपन्यास पढ़ने हेतु वे इतिहास के हैं लें।

पूर्व विशेषता ऐतिहासिक उपन्यासों के पात्रों के अनुप्रयोग.
के छिवे पाठ्य का एक वार्षिक अन्याय ना भुक्त है । कल्पना-प्रधान 
पाठ्यालय उपन्यासों में केसरी ने अपने स्वदेश-प्रतिदोष की दृष्टि से 
कुछ नई पाठ-पुस्तक भी प्रकाशित की गई है । अतः पाठ्य के कुछ एक विशेष 
वर्ग के साथ प्रकाशित वर्ग उपन्यासों के पाठ्य का अध्ययन करने के लिए पूर्व प्रमुख 
पाठ्य का ही आधार ग्रहण निम्न नहीं रहा है ।

शास्त्र वर्ग ।

प्रकाशित वर्ग के उपन्यासों में केसरी हिन्दु शास्त्र वर्ग के पाठ 
सुधारणा होती है । इन्हें गणपति राजा (राजा) और राजकुमार तथा 
राजमहल बाबूद लीला की विधान है । प्रत्येक कौटिक पाठ्य केसरी में प्रायः 
बही विनिर्देश या मौल उद्धव पूर्वकर्ता अद्व्यायों में निम्न ना बुझा है ।
उनके राक्षस का महां उनके न्यूनतर हिन्दू वैश्विन्द्र का विवेक प्रकाशित निम्न नहीं रहा है ।

गणपति चिन्होद्र दिश्या (दिश्या) मध्यम के लघुकथित महा-
केसरी और गणपति हैं । अपने गण की स्वतंत्रता में ब्राह्मण के लिए 
उनका प्रेम मद्य की ऊपरी श्रेणी पर दार्शनिक केसरी पर धार्मिक के सम्म 
दिशार देता है । क्योंकि समय और विज्ञान नहीं अवश्य या तरीक़े में उनके शास्त्रीय सामुदात की मात्रा फिरती है, हिन्दु युद्ध 
में विज्ञ के वस्त्र के अन्दरु उनके रागप्रस्त प्रेरण उनके कार्य का 
स्थान देता है ।

रागा यथा एवं, यथा ईवं और यथा (वाचा नोगण) 
रूपान्तर कौटिक के हैं और नेवार के रागा पद के अभिव्यक्ति । शास्त्रम 
विश्व एक आदर्श हिन्दु रागा है, जो आधुनिक अपने देश की स्वाधीनता की
बख्त राघने के खिले दिल्ली, मल्लया और उसात की अत्यत्तम सत्संक्लान से क्षेत्र संक्षिप्त कराया। रीता के खिले वह आदर्श स्वभाव-पिता के रूप में अचिक्न है। राणा विक्रमसिंह एक आलोचकीय राजा के रूप में चित्रित किया गया है, जिसके पीछे पर नागरिक, और विज्ञान के अवशेष के एवं उसे नेतृत्व निभाए खिला। राणा उदयसिंह राणा विक्रमसिंह का एक कविता घरा हुआ रहा। वह आदर्श है। विनम्रता है, रीता के नेतृत्व से घरा रहा।

राणा शंभू सिंह के ज्यों दुई राजपुर गोसिंह
उन यात्रा श्रीकम सीरो और आदर्श पाट के रूप में अचिक्न है। अत्यत्तर रीता के पारंपरिक पाट की आलोचना का श्रीम बोसिंह की ही जाता है। मल्लया शुद्ध में इंका का श्रीम भक्त यह प्रस्तुत आता है, जिसमें विवेक व्यवहार में। 

शंभू रीता के वह उक्ते इलाकानुसार कुण्डा-प्राणित तक जीवन धारण भी रहने के वरन पर प्राण हरकत है। सीमपुरा (सीमोपत) का राजपुर बनकिंह एक आदर्श राजा के शुद्ध के युक्त पत्र है जो दीन-दुखी प्राण के मध्य में ही। नग्न, भागु शुद्ध को भी अपने व्यक्तित्व के प्रभुकता करता है। शुद्ध के पूर्व अपने दृष्टियों में शारीर विधि की युक्त करने की अग्राह्य किये तथा कण्ठ शुद्ध के प्रभुकता में उसकी क्षमा, दृष्टिक और प्रियता की महत्ता में अपनी शुद्धता, एवं शुद्ध की अनुपारितात्त में उसकी क्षमा, परिवारो और प्रियता के रूप में अपनी शारीरिकता उसके शुद्धता में देखा शुद्धक को ग्राह्य कर देते हैं। इसीलिए नाम ऐसे शुद्ध को जो उसका तिर तिरौ-शैर-शाह के खिले माला के चक्रों में रहने की प्रतिष्ठा खिले हुए हैं, प्रतिष्ठा की अग्नि के दृश्य के जबाने के लिए एक सबक प्रति उसके पारस भिक्षु देता है। नाम केशव प्रति एक पत्र काव्य साम्यद का भावनात्मक नार्ता का शास्त्र, भावह है कृत, झुनू झुलना और भावना नहीं हारकर। केलके के शाश्वेत योगकार दूरा देखक ने इसमें आलोचनात्तर देखका अवशेषकरण का निष्पादण किया है।
दुदानी और उनके पुत्र वीरम देव और रत्नकंठ राणा
श्यामसिंह के दरबार के साथ और साथियों सुमाय हैं। इनमें अन्य सातों
की छोटी नियामित और विकासिता - जैसे हमविदार नहीं हैं। दुदानी
के स्वयं एक स्थानीय और क्षेत्रीय राणा, लक्ष्मी होने के कारण उनके
पुत्रों में भी वही उदात्त गण दुर्निष्ठित होते हैं। लीला अलग वेल्ड/देश के
पौरव की रस्ते के छोटे वीरमति पाते हैं। चमक बीरा का, ताज़ा ना
लेटा, माई और मत साथी है।

मैं वर्णः

" कल-वसंत " के एक भाषा, मथन देश के शिक्षा-प्राप्त,
क्षेत्रवाच खण्ड महते मंडल के स्थान प्राप्त है, खुद तो दीर, स्वस्थ और प्रयुक्त।
दुर्गचक্ষिण परिपूर्णितों में भी वे लकौल स्वस्थ और प्रस्त्वेक स्थिरता पर दुर्निष्ठ
रहते हैं। उनकी यह विचारणात्मक और कुल्लत उन्हें मंडल-गाढ़ और मुद्राकार
में अदुपुत सफलता प्रदान करती है।

केन्द्रः वर्णः

" दिल्ली " का ख्यातिगान बुद्धवारी पुष्पन्न हस्ताक्षर में
आता है। केन्द्रः के साथ प्रथम मुद्रात में वह एक विज्ञानी और प्रफ़ा शेनपतिति
सदृश होता है, फिर उक्तियों वाद बनसंभव दुविद्ध ही दुर्निष्ठा और
विफल। जिन्हे वाद प्रवर्तक स्वर्ण के तत्ताक्षर और गण्यतिकी लोकों के
कार्यकार के विचारों के सम्पूर्ण कुलकर वर्ण दिल्ली का अपेक्षा करके वह
आलोचना बनता है। वाद में आचार्य राजवीर के निर्देशन की अवधि के
वाद उनके लोग कर साधन आने पर और गण की क्षति हुत्तिया लेने पर वह
वोद्ध पद्धति बन कर अपने प्राण बचाता है।
आचार्य कर्मः

धर्मस्थ देव समाः, आचार्य प्रकरण और आचार्य राजा
इस कोटि में आते हैं। धर्मस्थ देव समाः गण के न्याय तंत्र के संस्कृत पुराण समन्वयात्मका धृति के प्रसिद्ध हैं। आचार्य प्रकरण, ब्राह्मण ग्राहार, और
gण-परिप्रेक्ष्य के लिए हमारे घटने आते हैं। आचार्य राजा
आचार्य प्रकरण का लेखक पुत्र, पुनःधेन की दास-पुत्र कहा था
कर्मरिंधर के देवता, साधन रिक्षा-ैहिन्द के बाद पुत्र। साधन राजा लां-
परिप्रेक्ष्य कर्म के गण-परिप्रेक्ष्य-समाहरण और गण-स्विधा का आता है।

दशारथराण कर्मः

इस कर्म में शास्त्र भारतीय (दिव्या) विश्वकार (सुर्य का ठीक) कृष्ण चरण (दाता लोग) संकर एकीक, संहू निकाले, और
अन्य वाक्य (कश न्यथा) आदि पात्र आते हैं, जिनमें से प्राकृत के व्यक्तिविश्व
का अध्ययन वैश्वत्मक है। आयं मारिस्क एक अपद्रक वैविद्यार, तारा
के वैविद्यार दर्शन का सार्थक, द्वार्शिक अन्य तत्त्व से सम्बन्धित कर्म और जन साधारण
में सम्पन्न और मनोज न कृतिनाथ, जीवन का सर्वेक्षण द्रव्य और परम्पर
आभाम में नीवन की सार्थकता और परम्परा में नीवन की सुविधा और बलता
का अनुसरण करने वाला। वह लेखक के विकारों को प्रभावित करने वाला एक
प्रतिवन्धित पात्र है। विश्वकार एक गायक, निख, श्रीक महाशेखरी
मारिस्क के उक्त निकाले के लिए स्त्री है नाने पर विकार देनी, जिन्हें
लॉक नीवन के प्रति सख्तिज्ञान, महानाम में नीवन के विवेक के पर राजमहारी
चंदा के साथ वह विवेक को स्त्री संपर्क के घटको के वाचकरी निहाला
करता है। कृष्ण चरण राजा के प्रश्न और शरीर का मत साथी है।
इस विकृत मान्यके विश्वास और उदारकर्म की प्राकृतिक धौलक पात्र है।

विवेक चेतना का विषय और शरीर का मत साथी है।
पिता की भरी-कुद्धी की वृत्ति उसके मन में मीरा के देह-सौन्दर्य के प्रति 
अनन्य आकर्षण उत्पन्न कर देती है, जिन्हें उठाया, त्यान, धारणा, शाश्व- 
रक्षक बाबाद के अनुसार वह भी वह कुम नहीं हो सकता। यह आसांका उसे 
" ओह! " के ध्यान में, त्योहार दूर में बर्सा मीरा का दर्शन कराती है। अब तत 
कृप्यायी मीरा से उसकी प्रारूपित की स्थायित कृप्याचरण के नारी-मौह का 
उत्पादन कर उसे कृप्याचरण में दौरान करती है। सबक डेसीम एक विशेष 
आय, शासनशाली और महानायक का विख्यात यक्ष अनुप, जो उसके स्वेल 
दे वास्मूत हो भारत में व्यस्त है। अब इंदौरी राजपथ के संसार में 
उसका राय और नारी-दादोशीय अदुरू है। सहु वेलडों और अंतक जावता, 
कमलेन और नाग युद्ध के विश्वासपात, देशस्मृति और कथन परायण सेन्निक 
है।

कंट-प्रतकीर कवि:

इस कोटि के अन्तर्गत रेदास और लाउदौशा का समावेश 
होता है। रेदास एक अन्यत हिन्दू सेत है और विश्वास कृप्याचरण, कृप्या-
मूर्ति के दाम से मीरा के पुरुष सागर नाम बाधे। खादुदौशा एक चुकी 
प्रतकीर है, जो पूर्ण वीक की अवस्थांकित के भाद चुकी का प्रभाव में वहाँ 
ईंक्ष की फ़ाराब करता है। कृप्याचरण का नारी-मौह इन्द्रों की नारी 
आसांका का प्रभावित लघु है।

ग्रामीण पौड़ी साहु:

ग्रामीण पौड़ी का प्रतिनिधित्व करने वाले पात्र हैं, सद्राशिं, 
और उनका शिष्य झर्दर राजी (जाह नेवा)। सद्रास्तिं है, कवालिक 
आचार्य, ग्रामीण पौड्डी के युग और अपनी लघु भाषा के तल पर मौस मध्य के
शीन्हिर । उनका शिश्न् शंकर राशि, यिदिक्वा का सपथ प्रयोक्ता, किन्तु हीन वृत्ति का शास्त्र । खंडोर पुनः के समय शंकर राशि दूरारा मोहन-प्रयोग
में वह पर अश्वर बाद चाँद को रमाप्त कर शनिदराशि का अहुँ-
मानिक देखना उनके चांट को देखते स्थानांतरिक नहीं होता।

श्रृंखला वाय्य ।

प्रकृति वर्ग के उपवासों में श्रेष्ठ वर्ण उन धनिकों का वर्ण
है, जो द्वार से शास्त्र-महापरम्परा और पिन्ने योगों के भ्रान्तीक उपवास से
विख्यात कर और शैवालिक के प्रयोक्ता का वर्ण जाते हैं। श्रेष्ठी प्रेस्च (दित्या)
और महाप्रेस्च मणिबल्क, विख्यात्सु और एक श्रेष्ठी आने-रा (हुओँ का
ठोँका), इन वर्ग के प्रतिनिधि पात्र हैं। प्रेस्च अपनी कुलता से शारणहोत्र
से मद्य गण का प्राणीक ला जाता है एवं गणपति की पत्नी श्रीरो के साथ
प्रूयून के विवाह दूरारा गणपति की मुखे एवं श्या का प्रयोक्ता भी। शारणहोत्र
मणिबल्क का एक समय का च विद्युदित, कर्मकार के निरीक्षण की रूपस्पर्श
किये साथ में सम्मिलित होने वाली-वाली कर सार्वाधिकारिक और महाश्रीरिति
ला जाता है, तथा नवानागर में विद्वीध के समय अपनी स्वभाव-शक्ति के झग पर
विद्वीध का दुर्लक्ष कर बह तथ्य आदर भी हो जाता है। विख्यात्सु और
आने-रा शामिल इसी क्षेत्र के पात्र है। श्रीरो और शैवालिक का क्षेत्र
अन्तर। इनके ही ठीक जाता है। दास-स्वभावार्थी झुल्ला और बुध वानस्पति
जपायदा के सीमास्तम्य है ।

शृंखला वर्ग ।

दासी धारा, धाम (दित्या) हुआ (मुढ़ों का ठीका)
और दास बाद (दित्या) और ज्ञान (मुढ़ों का ठीका) तथा कीक्ष केरी।
निवासी केरी और विलक्कमूर (पुस्तक का दौड़ा) इस वर्ण के प्रतिनिधि पात्र हैं। दास वर्ण के पात्र दास होने के कारण निवासी और मिरीह जीवन के प्राणी हैं। स्वामी की देवी, आनुवंशिक बल्बाचारों को सहन करते द्वारा जीवनभार इसका सहन वर्ण है, किन्तु बल्बाचार की भाव पर ध्यान-निरदेशित बिद्वेश ही इसकी दशक्षणता की अभिव्यक्ति है। उपयुक्त दास वर्ण इसी प्रसिद्ध का अभिव्यक्ति है। विलक्कमूर अपनी प्रेमीला वेंगी की कीन्ताधिपति की बांडू दृष्टि से व्यापक महानगर है आता है, नहीं फिर बेँगी मणिबाहि नवें प्रेमी कररे का सिकार हो के के के घाती की भौति में विकस है वेंक रहता है। शून्य की इस प्रक्षेपित के सभी दास और बन साधारण वर्ण परिवर्तित है। वेंगी का कीन्ताधिपति की बांडु दृष्टि से, बने अपने प्रेमी विलक्कमूर के साथ महानगर में आता, वहाँ अपनी कवि को सहन पर दस्तक देता, मणिबाहि के प्रासाद को स्वीकृत करना और नीरुगर की प्रतिशिवाय में कवि दुर्खारा विकल्प बनाने पर भी उसकी हर्षया के दौरे प्रमाण बनना और द्वारा में मणिबाहि के व्यापक के दौरे ऊपर होने पर प्रासाद से मानना आदि उसके चरित की सत्यावेश और अव्वामार्कित बना देते हैं।

भवी पात्र
उत्तमलक्षण

प्रभुत वर्ण के अन्यायों में रक्षित भवी पात्र राजमाता, राकुमारी, नकी माता शामाता आदि वर्ण में प्राप्त हैं। कुण्डल माता दीरा का स्त्री पात्र में स्वर्णपरि और अन्य स्थान है। वाक्यावश्यक में दुर्भावी के कुण्डल माता के संग्रहों का अभिव्यक्ति, माता की तत्त्वात्मा में पारस्परिक कुण्डलीयों के दृष्टिया का विश्वास और काल-छेद, नित्यसमाप्ति उसके वरिष्ठियों द्वारा उसका अकसराण, ब्रह्म-मूक्ष में दीरा की कुण्डल-माता की धूप, जन-जनावर द्वारा उसका विश्वास स्वीकार करने की उत्तराय,
उसके समय में उन्होंने वास्तव पर उसका व्यक्तिगत प्रभाव और दृष्टिकोण का व्यक्तिगत प्रभाव करते हैं।

शांति के राजकुमार कक्षेन की माता एक विशेष राजमाता के रूप में विवरण है, जो यहाँ चारथि या यहाँ का शासन करती है और कक्षेन में सहायता से एक आदर्श राजा के पुजार का विवाह करती हैं।

राज धाँरी खेलता अपनी स्वतंत्रता के लिए प्राणों की आदतित्वात दे देने वाली ज्ञान-प्रमण ज्ञान है।

मलिकन और रत्नाला क्रमांक: भारत और ज्ञानेन्द्र नदी के रुद्र-कंपक ज्ञान-रुद्र में संगम है।

नीराकर और राशिता, दोनों मछली छूटेनाई हैं जो माणववंश और नाग व्यापार मारता घूम पर कानी बातते हैं।

धर्मशास्त्र ग्रंथ समाप्त करने की प्राणी, प्रमाणित है, क्योंकि विवेचना दिशा था जो विवेचना नारी में तत्त्वात्मक चिकित्सा करती है, जो जीवन की घटनाएं के घात प्रतिशीत है, जहाँ प्रतिदिन भोजन कलेक्ट हो अभियान की खेल में भाग लेती है। वस्त्री प्रतिभा-विनोद और देशवासियों से युक्त एक वाह बजा है।

सौंदर्य संग्राम एक साहित्यिक, निर्माण, स्वातंत्र्य-प्रमण और उल्लेख की प्रतिविद्या है। फिर के उल्लेखानुसार कक्षेन की प्रतिभा-पालन में सहयोगी होने के लिए पिता का निर्देश काट उसे देना नाग-कल्य वाहे संग्राम हो कर छांटी है।

उपयुक्त प्राणी की चारित्रिक विशेषताओं के उद्धारण के
रिखे प्रस्तुत अभ्यास में लेखक ने इतिहासीक, नाटकीय एवं विचित्रतात्मक पुष्पात्माओं का प्रयोग किया है।

लेख प्रथम वर्णानात्मक लेखक में लेखक द्वारा प्रस्तुत पात्रों के शब्द रूप से तथा रैलियक संदर्भ के समापन तथा प्रियोग द्वारा बचाव का निष्कर्ष गाहा उसके तत्त्वों हैं: "दोनों ही पुनःशक्ति दिखेला अपनी कला के वैश्व में साधारण नागरिकों के रूप में अपनी कला के प्रतिनिधि मात्र जाँच पड़ती थी। कृतार्थ दिखाया हुआ वास्तविक, रैलियक उत्तरयोग में महानी का प्रतिनिधि मात्र जाँच पड़ती थी। प्रथम पुस्तक नाटक का प्रतिनिधि मात्र जाँच पड़ती थी। प्रथम पुस्तक नाटक का प्रतिनिधि मात्र जाँच पड़ती थी। \
\[1\] दिखाया अपनी श्रेष्ठ नृत्य-कला के प्रियोग अध्यापक पुरूषों एवं पुस्तक श्रेष्ठ-कौशल में विशेष वहीनेकर होने पर अपनी तदनुसार वेष-पूजा में प्रस्तुत है।

"काथैत्य" में सक्कर भेलीम का आकृति वर्णन दो पुस्तकों तक चलता है, उसका आरोपित स्वप्न देखिये। "पूरे छः हाथ तथा और दो हाथ चौड़ा यह मुन्न था। खाया है लो मानो हवा जूती चाही और चाही, लो मानो इसे पैरों के आधार दे हाथी नृत्य के तत्त्व उत्तम हो ऐसा। "3 - - - - - - अंत में लेखक बताता है मानो हाथी ने मुन्न का रूप धारण किया है ऐसा यह तुक-हटित कला जा रहा था। 3 इसके भेलीम के शरीर की वांछनिक और मन निर्देशनका रणनीति रचित है। इसी निर्देशनका प्रस्तुत कर्म के उद्देश्यों में आदर्श, स्वद्योर, आदर्श मार्गरित, श्रेष्ठ

1. दिखाया, पृ. 57
2. काथैत्य, पृ. 7
3. नहीं, पृ. 2
प्रेम, माणसी, नीलकंठ, वैणी, मीरा, माँ, नाग, कक्केन, सद्गाँवी, राक्षिता, सत्य, श्रेयों, श्रेयों के व्यक्तित्व की विशेषता प्रकट की गयी है।

पात्रों के व्यक्तित्व के ये चित्र अपने परिक्रम के पात्रों को प्रभावित करते हैं, दूसरी ओर उसका विशेषण पाठकों में उनके प्रति नयी निवासार्थ उत्साह करता है। "दिव्या" में "सर्दियों पूरी" का भेष प्रदान करने वाली दिव्या की नृत्यालय के सम्राट में आंख एक दिन दिव्या बड़ी उठता है। "अंद, दुधारी का दुधारी आलक्षण शक्ति का निवास मात्र है, जो नारी में बृष्टि की आदि शक्ति है। " मारिश के दिव्या की कला की प्रक्षित से उस पर पड़े मारिश के कथन का प्रभावात्मक चित्रण देखें - "अनौपचारिक ओर अनावंत के सम्मेलन का अवसर पाये मारिश के इन शब्दों, उनके छवि ओर नैतिक के भाव से दिव्या को अशोकाक्ष रोमांच हो आया था। "मारिश के उत्साह में रोमांच मारिश के व्यक्तित्व की प्रभावात्मक स्तम्भता का परिचालक है। "काल दिव्या" में प्रजा में व्यापक नाग (काला नाग, नाग संगार आदि) का प्रभावात्मक चित्रण भी इसी कौशल का उदाहरण है।

पाट्रों के शब्द-चित्र ओर रेलिंग के ब्लॉकर विशेष पारिस्थितिकों में उनकी प्रतिक्रियाएँ ओर उनके विचार की उनके चरित्र की विशेषताओं को उद्घाटित करते हैं। "मारिश का आलक्षणिक नृत्य में राजदृश और मारिश दौड़े" के द्वितीय के जाल में पंजों पर एक कापड़े वीरभद्रारी मिठु रूपान्तरित होता है।

१ दिव्या, पृ. ७६
२ कहीं
३ काल दिव्या, पृ. ५६
उद्घोषन करता है, "जुड़वाना जन देश, और जाने, माया के बैठन में नीब की सौर प्रकार ढुंढ की मिथ्यानुपूरति का प्रम होता है।" 1 इस पर जारी और कायम स्तंभ में मारिश का उंचा हुनाइ है - "यदि, दुःख की प्राप्ति में नीब का शास्त्र क्रम इसी प्रकार करता है। वैराग्य मीर की आत्म-प्रवृति का माध्य है। नीब की प्रवृति, प्रवृति और अन्दिश्य सत्य है।" 2 यहाँ माया के बैठन के प्रति बादश बिष्य की प्रतिक्षा और सत्य को उद्घोषन एवं बादशबिष्य दुर्योग के अनुसार वैराग्य के माध्य में प्रति आय मारिश की प्रतिक्षा और नीब की प्रवृति की प्रकार और उसके शास्त्र क्रम का सम्भव दोनों के विरोधी विचारों और उनके व्यक्तित्वों के परिचायक हैं।

इसी प्रकार "कार मैरव" में स राक्षस की संरक्षण देने के समान मेन्हता में राजमाता का रूप - "और क्षुद्र तो नहीं" नाग संघर के साथ कंभर होगा।" 3 कन्यामन का पितृकुटार के का की प्रतिका के के लिये वाच्य करता है।

व्यक्तित्व के बिचार और कार्य में प्रायः एकत्रित दुम्पित्थापीर होती है। पुनःजैसा विचार करता है, वैसे ही कार्य की अवसर उसके होती है। अतः व्यक्ति के कार्य भी उसके व्यक्तित्व के अभिव्यक्त है। प्रेम एक महत्वपूर्ण व्यक्ति है, उसकी प्राप्ति में सहायक वस्तु के "अविकल संसार की सौर निर्माण वचन अंकी धिकर वचन का उसके लिये कोई महत्त्व नहीं। उसकी महत्व- कार्या की प्रति में कोई स्वाध्य हो सकती है। अतः वह अपने धर को उसके साथ विचार के लिये वाच्य करता है और दियमा भूलालनिख की प्राप्ति पुका दी जाती है।

इसी प्रकार व्यक्तिमय परमचेत भी साौरसार की लाए के बाद बेणी को देखता है, तो उसे अपने प्राप्ताद में हे जाता है। अधिकार की भव्यताएँ

1 दियमा, भू. 15
2 नहीं 2 कार मैरव, भू. 60
वाचन दिनहरा की अपवाद, अवस्थाओं में इस वर्ग के लेखकों
के वर्णनात्मक रूप है। इसके साथ ही अवस्थाओं के
पात्रों में स्थान दिखाया और मनोरमता की सुरूवात के फिरे नायक, अन्य विचार-
प्रवर्तक पद्धतियाँ का भी उपयोग किया गया है, जो उनके चारित्रिक उपकरण में
भी सहायक होती है। जीवन के बाह्यात्मक शृंखला जो कहा गया मारिज़
का कथन यहाँ दर्शता है।-- "मरिज़, जीवन का कारोबार अनुभव स्वयं या
परिवर्तन नहीं। जीवन की विभिन्नता शाखा में है और समय प्रवाह है। प्रवाह
में साधु-असाधु, धिम्म-अधिम, सभी हुए गए हैं। प्रवाह काम क्रम ही सृष्टि
और प्रकृति की नित्यता है। जीवन के प्रवाह में एक समय असाधु, अधिम अनुभव
आता, इसको प्रकाश में विदर्शन होकर जीवन की तुषा को बुद्धि न करना
केवल है। " मारिज़ का अल्प कथन वास्तव में नहीं जीवन में नहीं
चेतना का वीर्य समेत द्वार से हुआ है, यहाँ उल्लेख की सहज लोकप्रियता
उत्तम की रमणीयता भी प्रस्तुत करती है। "काल मैरिज "में कुछ सेन और
लोहरी जीवन क्षण जल्दी पात्रों पर अपना अधिक प्रमाण छोड़ चाहता है। गाथियों
के लोकनाथ जोकर कन्हैया की रोक कर सोहनी शिला की उद्भवानुसार उसे नीचरण देने के
लिए कहती - " महाराज नाग संवार के अजुनक का बोध भावस्वास नारी का अह
करना (नहरना) अपनी भाव को आप पहुँचा दीखते। " कहते हुए उसकी
एक फर्थ लोहरी ने कन्हैया को दी। इसमें नाग संवार का मस्तक था।
देस बहु विकिरित हो गया और मस्तक उसके हाथ से नीचे जा गिरा। " यह,
दिव्या, पृ 163.
यह हैम लाइ ? " " मेरे पिता की भाषा, बाबा की कौन है, लाइ मे है। अपने शादी नाग संगार की कथा की खिलाफ भी नहीं लाखिते, महाराजा।" कौनीं का यह स्योपक्तम बहुते मरम्मतीं बाहे उसके तथा उसके पिता के उद्दर्शे और वृत्तार्थ की अभिव्यक्ति करता है। इसी प्रकार बाबूलाल बाहे नाग, बजनाराज वाले वीरु में, "दिखिया" में पूजाको दिखिया, दिखिया और महाराजा, यथा मीरा और दुर्गा दोनों तथा कुछ नियोजन जादि के ब्योपक्तम क्षारक्षु में सन्ततिका भद उत्पन्न करते हैं। सम्प्रभु पात्रां के चरित का भी उदाहरण करते हैं।

नाथकीय खैदी के साथ ही पात्रां की मनाहथिति का निरूपण करने के बिच मनोविशेषणात्मक पद्धति का भी प्रयोग किया गया है। "वाशा जोगण" में प्रार्थना, मन और कौशल के उपरांत भी मीरा की मानने निकन उसके मन में मनन-प्रार्थना के विषय में वन्दंदिवन उत्पन्न कर देता है। दुर्गारा का सांसारिक पहलाएं के पूज में ईश्वर ईश्वरा की स्मृतिवर्तिता का भाव उसे वास्कत करता है। इसी प्रकार शाकुल-जनारा धार्मिक-दासी दुर्गारा (दिखिया) का अपने चार्चारी के बत्ताराजां से पीड़ित शाकुल को लेते हीम्न्य किसी विशेषण उसके दृष्टि की पृष्ठ को मुलर कर देता है। पूजाके दृश्य उपेक्षात् सामार्थ दिखिया तथा सीरो दुर्गारा प्रताड़ित पूजाके दुनन्दवार्सन भावों की अभिव्यक्ति की खाको प्रवाखाली रूप में हुई है।

इस प्रकार उपभुक्त विभिन्न अवधारणाम् का अपनी अपनी मनाना नेत्र को म्युक्षक अपरिमाण कर लेने ने अपने अन्याः के पात्रां का भलह ही सीम के प्रभासाहारी चरित्र-विभिन्न किया है। उसके साथ पातरां का

कान्त मैथु, पृष्ठ २२२
यहन अपनत्व लेख की सफल चरित्र-पूर्णता का बोलता है। ऐसी पात्र वास्तव में पाठकों के भर पर अपना अश्रुपूर्ण प्रभाव छोड़ देते हैं।

इन उपन्यासों के पात्रों के चरित्र-चित्रण में सुनहरा पुरुषों के भविष्य की दृष्टि में हुए, जिसके नामन्त्र में हुम गवाहन में संगत तथा प्रतीतिकर नहीं रहते। सकर इतिहास के नाम हायरायण सम्पन्न के नाम पर अपने दाताश्रित दुष्कर्मों को संभाल करने में बच सकते ही सकता है, जो हमें किसी राजकीय अभियान की जान कर भी कह नहीं पाकर। उसका है, लेकिन राजदार ने घोषणा की यह ही ज्ञात समाचार दिखाया हो। लेखक का चरित्र की सुनहराई ही ज्ञातवानकाता से सुक्त है।

अपने पात्रों के अपने के बाहर पर यह रहा ना रहता है, जब हिंदी के "दिव्या" और "युद्ध" भाषाओं में पात्र-पूर्णता लेखकों के बिंदुस्थत प्रतिक्रियायों की अवस्था के प्रशस्त की गई है। पुनःप्राप्त उपन्यासों की पात्र-पूर्णता अपने स्वयं समाज के दृष्टि में दृष्टिगत होती है। पुनःप्राप्त पात्रों में भाग्य भारित, विश्लेषक, द्रौपदी, लोकसंहिता, कन्यकृषि, व्यक्तियां, और सकर वेदीन तथा राही पार्षद में दिव्या, राज-कुमारी चंद्रा, नीरा, गोरी, संघार और पल्लवी बाद के चरित्र लक्ष, नीरी और ठाँसकर है।

निम्नलिखित:
दक्षिणांतरहित
दक्षिणांतरहित
हिंदी के कल्पनाप्रणाली परिलक्षित उपन्यासों की पात्र- पूर्णता लेखक दूराधि अपने समाजवादी दृष्टिकोण को दृष्टि कर प्रस्तुत की गई है। उनमें बाज के समाज के ले होस्पिष्ट और दौरानिका पुरुषत्व में प्रतिविचित्रित है।
"दिया " और " पुदा का ढीला " का अभिमान वाण और ब्यौर वाण
tतत्त्व में शोध वाण का प्रतिनिधित्व करते हैं और उनकी भेंडा तथा राजकीय
dुसरा उसके द्वारा निहें भाले सौंदर्य के माध्यम हैं। वहाँ की प्रजा,
दाल स्वरूप और सारी शोधित वाण के रूप में विचरित है। लाभ ही सकारात्मक, लोक-भीत्र के सब इसमें स्वतंत्र रूप में कर्त्तन हैं। " पुदा का ढीला " में
भारत में धारण के स्नातक गर्दन के विशेष-भीत्र का इतिहास का भाज्य का
स्वभाव के समय तो वाणिज्य ने प्रक्रिया ने दुनिया बुद्धिमत्ता के पर भाज्य
और विशेष की समस्त प्रजा की विद्यमान के रूप में विचरित किया गया है।
विद्रोहियों के प्राणदाता के द्वारा शोषण के अध्ययन की बार परिभाषाते
भी यहाँ प्रभुता की भूमिका है। इस प्रकार सहकार के अनुसार
अपनी सात मुक्त द्वारा साहित्य नीति को समय रूप में स्थापित किया है।

पुनरात्मक के ऐतिहासिक उपन्यासों के पात्र मानव-नीति
के एक निश्चित अंश को ही प्रकट करते हैं। " वास-सौंदर्य " के पात्र वृऱ्ट
मूब के रूप में कुछ साहित्यिक गर्दन राजनीतिक नीति को ही स्पष्ट करते हैं।
भीर, देश और साउंदर्य साधन-नाक को प्रकट करते हैं। " मधुर श्रेष्ठ "
सख्त लघुहर्ष प्रदेश है सम्बन्ध है कि वहाँ के लोग प्राचीन लघुहर्षी नीति
के धर्म हैं, लाख, कन्हल, लंगू वेलह, अनंत चायडा, सकत भैलों आदि
राजा, अग्रणी और तैमी होते हुए भी समृद्धि नीति के लाखी हुमक्के हैं।
वहाँ की प्रजा में भी यूँके द्वारा उसकी नीति का सर्वदा है। साधारणzag-
प्रमुखता वहाँ के लोगों की बढ़ोतर प्रती प्राप्त उत्पादन व्यवस्था व्यवस्था करते हैं। इस प्रकार नाभ
मधुर के पात्र एक प्रदेश विशेष का व्यापक नीति व्यस्त करते हैं।

कथीप्रकाश कः

प्रभुता वाण के ऐतिहासिक उपन्यासों में कथीप्रकाश अपने उद्दी
पय में दिखाई देता है; तत्त्वी किताबिच्च उपन्यासों के अभ्यमन में हम उसे देख चाहे हैं।
जन साधारण के भक्ति कथापक्षन उनकी अध्यात्मिक मान्यता में है, तो वरिष्ठ और विविधता की भांति के पात्र परिष्कृत और भुवनेश्वर मान्यता का प्रमाण करते दर्शित होते हैं। पात्रों के माध्यम के वरिष्ठ और उनकी परिष्कारता से उनके वातावरण में प्रतिभानिक होता कथापक्षन के ख़िलाफ को एक नया ही बैशाह्यम प्रदान करते हैं, तो वहीं विविध विनिमय पर विचार-विपरीत दृष्टांक एवं अपनी प्रतिक्रियाओं द्वारा पात्रों के चारित्रिक उपयोग में अपना दृष्टिकोण देखा हुआ दर्शित होता है।

"वालायेन्द्र" में सच्चांवभास करती हुई भीरा के कृष्ण-बर्ण कहता है - "तू तो सच्चांवभास करने जोग है, पुनः सेका सभी गुण नहीं।" भीरा उम्मीद देता है, "कहा गया तो मेरे भक्तार लाल जाते हैं।" में तीर का फिर नाम बदलती हुई और मात्र नाम बदलती हुई जाती। वह में तीर के सैकड़ों ही और महत्वपूर्ण लाल की जाति दिलख देती है। में तीर के सैकड़ों ही और महत्वपूर्ण लाल की जाति दिलख देती है। में तीर के सैकड़ों ही और महत्वपूर्ण लाल की जाति दिलख देती है। में तीर के सैकड़ों ही और महत्वपूर्ण लाल की जाति दिलख देती है। में तीर के सैकड़ों ही और महत्वपूर्ण लाल की जाति दिलख देती है।

परिवर्तित स्वरूप का उदाहरण देखिए दिव्या के समृद्ध दार्शनिक पुण्णिमार्खार अर्थ मारिश के आपने कौशल कथन में - "मारिश देवी की रानियासंसार में महादेवी का आसन बाध्य नाहीं कर सकता। मारिश देवी के निशांत के मिश्या विनिमय श्रुत का आश्वासन नाहीं देता। वह संसार के"।

1 वाल्य जोगण, पृ. 113
क्यावस्था की परिसंचारित प्रदान करने में क्योपकल्पन का भौगोलिक ब्रह्म ही रोक बौद्ध प्रभावशाली रहा है। “दिव्या” में क्यावस्था का ब्रह्म ही प्रारंभः पुपुस्तक के गद्दर्पण से सूचना संशोधन निविद्या के द्विभाषित और विश्वास प्रस्तुत करते क्योपकल्पना से होता है। वर्तमान प्रसाद में व्याख्या संदेश के लिए उपस्थित पुपुस्तक के साथ दिव्यांग के क्योपकल्पन पुपुस्तक के प्रति उसके आर्थिक, उपहार और ब्राह्म-सम्पर्क की ओर उसे ही जाते हैं। प्रेमपुपुस्तक, एवं पुपुस्तक में क्योपकल्पना दिव्यांग की ज्योतिः में परिणत होने के कारण उसे दर्शनीयक ने पूर्वक और कारण पर ला उपस्थित करते हैं। विद्वाने पुरोहित के यहाँ वृद्ध दासी कृष्णा और दारा (दिव्या) क्योपकल्पना एवं रंग विश्वास तथा दारा का क्योपकल्पन जो यमुना में अभावनत करने को लायकर हैं। महुआ के उस सन्धि में अध्यात्मित करने के लिए शारीर है ब्राह्म बौद्ध गर्भ के प्रतिवेद करने पर पान्नशाला में संविध दिव्या के साथ भाषार संहरी, पुपुस्तक पुपुस्तक और ब्राह्म महर्षि के क्योपकल्पने से उपन्यास का ब्राह्म होता है। इसी प्रकार "काल मेन" में अध्यात्माधुर उद्दराशित और अधोर अध्यात्माधुर उद्दराशित और कृष्णा ।

दिव्या, पृ २१६
पक्षों का क्योपकथन, स्वरुप पंपी शाहु और कन्नेन का रालिका के संस्कार सम्बन्धी क्योपकथन कथा को नाग-कन्नेन-शु khúc की बोर मधू देता है। दूसरी ने कन्नेन के तीनों शाहुओं के फैस जाने पर कन्नेन और बनाजा चावड़ा का क्योपकथन बनाता की संज्ञा के रक्षे मार्ग उन्मुक्त कर देता है, जिसमें उसकी पराक्रम बिन्दु में बदल जाती है। गाथी बंदर पर नाग-कन्नेन छोड़नी और कन्नेन शु khúc और बनाजा चावड़ा का कन्नेन दुर्लभ गाथी संस्कार सम्बन्धी क्योपकथन नाग के बालवीर्य दुर्लभ गाथी का अपने अंत की बोर के जाता है। इसी प्रकार "मोही का टीला" और "लाला जोगण" में भी क्योपकथन क्यावस्था की परिश्री स्वतंत्रता प्रदान करते हैं कक्ष रहा है।

पारापृथ्वी का चारित्रिक विकास में क्योपकथन की उपयोगिता सम्बन्धी विवेकन प्रसूत जात्मा के चारित्र-विकार के संताप कर आते हैं। अर्के अतिरिक्त की दिल्ली और चारित्र, प्रस्तु-पुष्कर, सत्यवीर-संयुक्ता, और क्योपकथन तथा कन्नेन और नाग, सोहनी और कन्नेन, पतली और बनाजा चावड़ा, नीरा और गीता बादल के क्योपकथन सम्बन्धी पारापृथ्वी के विविध चारित्रिक पक्षों को उपार्जन करते हैं। अर्के शाकुर के देवे नाम पर दिल्ली का तथा दिल्ली के नहाजों के भ्रम में कन्नेन के जहाजों पर जा पहुँचने और पिता की अनुकृति में भ गाथी की अभिकल्पना दिखाते स्वतंत्र पर सोहनी के अनजानवन्दु से विभेदित भी बढ़े सभी है।

इस प्रकार अन्य पूर्वस्ताता जात्मा की भाषित प्रसूत जात्मा के चैत्यहार्षिक उपन्यासों में भी पारा और परिश्री के अनुसार बदले क्योपकथन के चारित्र पर क्यावस्था में संज्ञा और परिश्रीका बादल के रक्षे रहे पर दिल्ली के उपार्जन भी सम्पूर्ण लेखनों में दृष्टिकोण होता है।

शामाज्ञाता प्रसूत अर्थ के उपन्यासों में क्योपकथन की एकृतता दृष्टिकोण होती है। फिर भी "दिल्ली" में चारित्र के लोकयात्त दशा है।
पूण दिश्या के साथ के क्षोभक्रम पर "मुदा" का ठीक " में पात्र विश्वास के व्यर्थ्य और काला सूत्त क्षोभक्रम पाठक के मन पर अपना शिफ्ट प्रभाव छोड़ दाते हैं। गुर्दाती के पौर्णिमिक उपन्यासों में से "काढ मेत " के नाम और कनौ देश के ऐसे संबंध में इसी कीट के हैं। वे वहुध ही सलात और प्रभावात्मक हैं।

बातावरण :

कप्पन-प्रधान पौर्णिमिक उपन्यासों में भी बातावरण का महत्त्व पूर्वस्तरी अफ़गान में प्रसूत बातावरण की जगता स्थिति प्रवाह का नहीं हुआ ना साता है। बातावरण प्रधान पौर्णिमिक उपन्यासों लेकन की बातावरण अपने पौर्णिमिक या प्रायः होता है, किन्तु कप्पन-प्रधान पौर्णिमिक उपन्यासों में उसे घननाथ, और पात्र के साथ बातावरण की स्वतत्त्व भी कप्पन के शृंखले हो जाती पड़ती है और वह भी इस दुःखित से कि वह पाठक भी समस्त दुःख के बातावरण की प्रक्रिया कर लाते। इन उपन्यासों में भी बातावरण की स्वतत्त्व के पूछ में लेखन के सप्तस अपने स्वदेशात्त्मक और क्लास्त उद्देश्य हैं। इन्हीं के अनुप्रय यहाँ बातावरण का स्वरूप और उत्तम उपयोग स्वतत्त्व होता है।

हिंदी के पौर्णिमिक उपन्यासों में, "दिश्या " और "मुदा" का ठीक " दौराँ स्वदेशात्त्मक उद्देश्य के लेखन जिन्हें भो हैं। "दिश्या " में लेखक अपने माण्डोलादी दुखितकोण के बनालय "प्राण और समाज की प्रवृति और प्रकट का रिश्ता " प्रस्तुत करना चाहता है। वह मारिया शे करेउता है जीवन की प्रवृति प्रबल और असंख्य लत्ते है। १ वातावरण:

१ दिश्या, पृ. १७
२ बही
निकोलिया व्यक्ति को मान्य आचारों की सहन करने के अवरोध भी उसे जीवन के मार्ग पर गात्र होने को प्रेरित ही नहीं, बल्कि आच्छाधि करती है।

प्रवृत्ति का वास्तविक उद्देश्य ही जीवन है। उपन्यास में कथन के सहारे चिंतित समाज की युक्तिदृष्टि पर उद्धार-पतन से युक्त विचित्र घटनाएं के पार-प्रतिपादक को सहन कर लगातारी दिशा (व्यक्ति) के माध्यम से यह जीवन की प्रवृत्ति और उसकी प्रश्नता का प्रभावीता विनिमय करता है। पुष्पकम के लेनारीत के परिवर्तित परिस्थितियों में बोद्धविभूषण व्यक्ति एवं उपन्यास के दृष्टिन दृष्टि में दिशा को बोधित घर्म में दृष्टि करने के लिये लोह माना,

तथा राणेरी का निर्वाचन से छोटा का लगा-परिकटन दुरारा पुनः पिकुड़ (गण परिध श्वाहक) पाने के लिये प्रमाण करना और उसे या लेना, व्यक्ति की प्रवृत्ति की प्रश्नता के ही परिचारक है।

उपन्यास में श्रीकृष्ण कस्बा बग्हार दुनी की विलासिता, दासों एवं नारी की जहरीली अवधारणा, दुरारा आमाना रीति, लेना की अन्वास्था, राज्य के में धनामाच, व्यक्तिक युद्ध-बीत भूमा करना आदि के दुरारा राजनीतिक स्वभावित एवं वालेव घर्म की व्यपकता, ब्राह्मण घर्म का ड्वार, तथा फारंकेन के लिये मृत्युदृष्टि का आमाना आदि के दुरारा धार्मिक और साहित्यात्मिक परिस्थितियों का तथा बुन के परिवेश के प्रौढ़ विचारणमा गया है।

वेश बुना, वेदोच्च, भिष्माचार एवं नीचन के आमाना व्यवहार के समान उद्धव जुड़ुबायों के प्रमाण एवं अपने कथन के विशेष दृष्टि के आत्म-विशेष को प्रतीतिक होने का प्रवृत्तिक मालक है।

"मूत्री का टीका" में डारो रामिक राम्य अपने प्राणिकादी दृष्टिकोण से यह प्रतीतिक मालक बाहर है कि घर और राज्यकार का दुरारा के फूल विशेष है। घर के लिये व्यक्ति परत होता है, शोषण द्वाराद्वारे द्वाराद्वारे।

मूत्री का टीका, पृथ २२७
करता है। इसके कायमपन के विषय में यह प्राचीन करता है कि प्रमाणवेच धन के इतिहास व्यवस्था का सार्थकता बनाता है। अपरिमेय धन उसे विकासी बनाता है। धन के न्द्र पर वह रीमा सुधरी नीपुत्र को महानार लाता है, और शोभ की रसा के रूप में रोकता है और महानार भाई वैणिक के अपने वास्तव में के जाता है। धन उसे धन की ओर अपनी रसा के रूप में हैन्य-संबंध का संबंध प्राप्त की ओर है नहीं है, जिसके न्द्र पर वह उसके व्यक्ति से सुधर चिदियों प्राप्त को कुछ का स्वयं प्राप्त कर लेता है। वैणिक, विभागित अध्यात्म-मान, शोभ भैरवी वर्त्त के पत्र है, जनक नीपुत्र, वैणिक, विभागित, श्रृंगर, श्रृंगर और झाप, शोभ और दास वर्त्त का प्रति-रिखित करते है। वैणिक भा हरण, चील पर जाय और दाएँ के आक्रमण के पीड़ित व्यक्ति के महानार में सहभाग-प्राप्त के रूप में व्यक्ति और उन पर ह्यान शक्ति-प्राप्त, उसके सुधर प्राप्त का विक्रोह, जेली घंटाएं धन और अविचार के दूर प्राप्त की सीमित में विक्रोह करते है। संशोधण में, चुम्रीन अविचार अवेशों के साधारण पर इसके अपनी कल्पना का समुच्चय उपयोग कर तत्कालिन राजनीतिक, सामाजिक और वस्त्रालंकार वातावरण का निर्माण करने में अपने कौशल का ऊंचा परिक्ष दिया है।

"लाल-मंगला" में इसके मीरा के व्यक्तित्व के विषय में अनुमान वातावरण का निर्माण करता है। कृष्णी शायदी में कान्ह-मेदान के अच्छे-संग्राम संह युद्ध में नाहर की किसल है दिस्ती की सहायता तथा युद्ध और मानव विश्व-संघर्ष का प्रारंभ था। युद्ध में मानव अध्यात्मों नर-संधार के कारण, लोक-मानस में मनि-मानव का प्रचार था। कृष्ण-मस्तिष्क दुदानी ने संघर्ष में मीरा में कृष्ण-मस्तिष्क का संचार और व्यक्ति प्रभावात्मक निर्माण
देखकर उनका अर्थमंडल लक्ष्य बन जाता है जिसे अपने ऊँचे कस्पना दु:वारा कह कृति में प्रस्तुत करता है।

भान्यास्थान में कुँज्यामत् दू:वारा के साथ मीरा और नयन की बातें में एवं कुँज्यारी उसन्हरी साधनरा ग्रामिष्ठी मीरा के कुँज्या-भक्ति के संस्कार की प्रार्थना; उसकी तत्त्वमान की स्थिति में प्रस्तुत - "बोल या, बोल या, बोल या, रे रायसुङ्ग बिना तीव्र बोल या।" एके पदों में उसकी भक्ति का पक्ष्यन, सहानुभूति में वी कुँज्या-संगम सी प्रार्थना, ध्यानास्थान में गुरुई अभ्यारण पर "बागे है रे, बागे है, बुनिपड़ गुरुई बागे है।" में सहन काम्यानुभवक, कुँज्यामता के शारण कल्याण की स्वर्णसंगम, बिहारीपरार उसके अनितोत्पत्ति से उसके विढ़ंतयों का भी उसके अनुभवके होना, राणा दूरवारा ऊँच पर प्रस्तुत नाम और विच के निधिप्रमाण होने के चमक्कार, वितोड़-निर्माण पर उसकी प्रेम यात्रा का एक यात्रा संघ में व्यदर जाना, जन्मोभि में उसके छह घंटे पर जन्मुर्म-प्रावेशभर्त, जन में उसके पद पद पर मनन-नीतिन की ध्रुम, उसकी गीतां धनुरी से कुँज्यामता भर्तमंडल का मीरामध्य हो जाना बादिके विकार हे देखकर मीरा की कुँज्या-भक्ति और युगोन परिवेश पर पढ़े उसके प्रभाव का निर्प्रमाण करने में स्विध सफल रहा है।

"काठ मैराक" साधुरी परिवेश से सम्पूर्ण उपन्यास है।

dहां जैसे व्यंगं सुध दे माला, साधुरा नाम प्रि साधुरा दुःवारा प्रार्थना के भवाने के भवाने प्रफुलुहण करता है। राज्याकरण को निर्देशति के आदेशानुसार कहकर कृति में उसने संस्कार में उसके कारण नाम के युद्ध की छुट्टी पर प्रबन्ध में बातरे, कहकर साधुरा मननानाथ के प्रत्साहन से स्वतः का साम्यता करने के उसकी काठमंडुका, पल्लवी दु:वारा नगरवर के शिफाड़ से राक के नवाशी का निरीहारण, युन्न पूर्ण नाम दु:वारा काठ मैरा की पुणा, एवं तदन्तर साधुरा की अनुभि करति
मैं अपने अपने जाहाज़ पर आए हूँ, नागान और अन्य बड़ा दुर्गा श्रृङ्खला के जहाज़ों पर आर्थिक जारी के रामायणीय वर्णन दुर्गा समुद्र का जीवित चित्रण प्रस्तुत करना पथ है। नाग दुर्गा को विग्रहान्वयन स्त्रियाश्रित की शहायता के बिन्दू-बुझन और संकर राशि की सहायता से काठ-अलव की पुराण के दृश्यांकन तत्कालीन वामनावर (कार्यालयों की) अग्रें पाट्यों की अपार्ष्व पद्धति का भी चित्रण प्राप्त है। इस प्रकार लेख यहाँ राजनीतिक और धार्मिक परिस्थितियों के चित्रण के खंडहर ही समाजिक परिवेश का निर्माण करता है।

कुछ रूपों पर सुदृढ सम्भव की वर्णन अनुमुखता भी लगते हैं।

समुद्र समुद्र के लाल दुर्गे दिन ग्रामसिकार में कभी हेट के पराक्रम के नाम लेते प्रवेश कर रहा है, जहाँ यहाँ द्रौपद्य के करहों में समुद्र का हर हर कर देता है। जहाँ उनकी दानवी पिंजरी, यहाँ अल्म ज्वाला में ही मानक-मल्लक उठते हुए दिलाई देते। जहाँ यहाँ कुछ दौड़ा है कि यह सभी कहीं सुदृढ़ नहीं, समुद्र समुद्र है, जहाँ अपने जहाज़ो पर रह कर ही सुदृढ़ बढ़ा जाता है और किंतु जहाज़ के चित्रित हो जाने पर इस प्रकार लक्ष के प्रमाण की आवश्यकता नहीं होती।

कुछ और निम्नलिखितः

अपूर्व अभिव्यक्ति के आधार पर यह यह ना स्मरता है कि हिंदी के दोनों अवस्थाओं धारियों हैं, और अपने सामान्य-प्रतिवाद के लिये रखे यथे गये हैं, जिनमें लेख अपनी-अपनी घटना और पाद-विनियोजन की प्रयास के लक्ष्य हैं। दोनों ही कुल्लियों ने युगीय राजनीतिक तारांकित, और लालाकृतिक वातावरण का निर्माण करने में लेख सफल रहे हैं।

उद्देश्यावलम्बी

काठ मैसूर, पृ १४४
युगाती के दोनों उपन्यासों में वातावरण का निर्माण कलापत उद्देश्य को केवल प्रभावित किया गया है। इनमें से "बाला नौगोना" में पुरुष राजनीतिक, धार्मिक, और सांस्कृतिक वातावरण का जीवन और प्रभावशाली निर्माण हुआ है। कुछ के समाप्त होने के बाद भी कुछ-भाग की ध्रुवीय पाठकों की सम्मान में उकसाया गया है। "काल मैरव" अपने समय के राजनीतिक और सांस्कृतिक वातावरण का निर्माण करता है।

हिंदी के दोनों उपन्यासों में अत्यंत अल्पकाल की पैरिश-हारिस्क कथन पर तत्पुरुष वातावरण की प्रतीति करते हैं और यह समय रहता है। "बाला नौगोना" में प्रभाव वातावरण दो समय-पाठक के संन्यास है। पूरी "काल मैरव" इस दृष्टि से इतनी क्षमता "कहा जा सकता है।

भाषा-शैली:

कथन प्रश्नान पैरिश-हारिस्क उपन्यासों में प्रभाव भाषा-शैली के अनुश्रुण के लिये हम बही आधार महर कर रहे हैं, जिसे पुरातत्त्व अध्यायों में महर जिया गया है।

भाषा में कथामुख के बहन की संस्करण:

प्रथम वर्ग के हिंदी और युगाती के पैरिश-हारिस्क उपन्यासों में असल ने कथामुख, पाठ, (बाला नौगोना के अल्पकाल) एवं परिवेश का स्तर कथन कथन न होता है। यह असल के मापा-कोशल और उसके समय उपयोग पर निर्माण करता है कि हम कथन-प्रभाव तत्त्व के विषय में कुछ का अध्ययन करते समय बालकों के उसके पैरिश-हारिस्क दोनों की प्रतीति किस स्थान तक करा सकता है। इस वर्गों के उपन्यासों के कथामुख के आधार पर और उनकी घोषणापत्र के आधार पर बहु जा सकता है कि इनमें प्रभाव मापा अपने
वस्तु-वहन के अपेक्षित लक्ष्य में स्थायी समकाल रही है, जिसकी प्रतीति परम्परा
क्वेनिया से की जा सकती है।

क्वेनिया अन्यायाओं में वस्तु-वहन, पाटी जैसे आपूर्ति कर्मण
तथा रैल्यॉन में माना जा वह नीचत मोर चिन्हों का दुर्गुण-रोध नहीं होता
है कि पाटक क्वेनिया में ठीन हो अया की देखी के लाभ-दाम भूमि का
अर्थ होता है। "दिव्या" के आरम्भ में ही गणपति निषादक के समूह प्रति-
स्पर्धाओं के आरति निदेशन का दुर्गुण ओहर भूमी का है। "४। सुनक
थल्लक वेश में तरीर पर यम और शित पर शिरर्षण पहने, की पर ध्वनि-
तृणीर नाथि, करव में बुध चढ़ाये, हाथ में माना ध्वेश वेशी पर आये।
सुनके ने भद्र के गण राज्य के समूह पाटी और महा-मनाराग प्रभुक्षर निषादक
के आरम्भ के समूह यथार्थ होकर नारिका के समूह अवधी बृह श्रीधि की
मत्तक मुखा का निदेशन किया। "भद्र के ब गणराज्य की सामर नयारी
का स्वार्थी, में धुःक नाम, धुःक पुत्र, श्रीधि-श्रीधि का शिष्य-प्राप्त कर,
धुःक स्वेत-वेश अदर्श में अगे मौथ्य पद प्रदान कर। "४। यहां लेक के
प्रथमीन युग के शत्रु का प्रताप करने वाले हैं नैसारिक को उनकी मूर्ख ज्योति में
प्रभुत कर, अपने परिग्न में ज्योति हजारहंस के हैं उनके गणराज्य नैसारिक होने
प्रतीति कर देने का प्रयत्न किया है। "काल मैरर" के आरम्भ में भी
लेक के माना में सारखा के साथ भौगोलिक का एक अद्वैत रूप दुर्गुण होती
है। अन्याय के पहला दिलाशा। "पूरे ४। हाथ ध्वेश और दो हाथ
नौँचा, वह मुन्न मा "-> "पाटक की कुद्रद-शियत को नागृह कर देता है।
अन्ये कह कर वह खिसता है। "पाटक वेश शत्रुर और हाथी जैसी लाम्प
और अर्थमेटिक नीश जैसी ज्यानाचार्य के प्रति भ्रमकर बाधित "मे समय मह
"दिव्या, पृ॰ २"
प्रकाशित चावड़े की सच में अपना स्थान ग्रहण निकले बैठा था। " प्रकृति कर्मन ने पाठक को सबकर देखीम के प्राचीन कार्य के भीतर यमन का एक अनभुषण चित्र मिलता है। इसके प्रकार "मूर्ति का ठीकरा" में प्राचीन के समय विश्वासवाद के महानार के हिंदू लीला पर आलसक और "आत्मा नीळणा" में दुर्गाकी के स्थानांतरण प्राकृतिक घटना का आकलन कर बीकु रूप और रेडियन के साथ पुनः बादु ने उनकी गांव की ओर प्रत्याशा जते दृश्य पुनर वादन में के मापा-वौशले के परिवर्तन है।

उपन्यासौं के क्षार्दु में इस प्रकार तोलक्ता उत्पन्न करने के उपरात्त उत्कक क्षा के पायीं शब्द-चित्र और प्रमात्मक चित्र प्रभुता का बनने को मात्रविश्व देखाया करता है। " मूर्ति का ठीकरा" में महानार के स्थानान्तरण में रचना करने वाली विश्व-महर्षियं का चित्र महान उल्लेखनीय है। महानार की अपने शृंगारियों का शैवाल उद्भव हो उठा था। उन्मल डुंकनों पर विस्मिन रंगों के बच्चे बिज्जे। उनकी कीट पर मननाताली मेरिना बिजी। विर के बुड़े उत्पाद की ऊर्जा उद्धार बाधो गये थे। काकों में लगके। भूमा के बुड़े उनके प्रस्तुक पत्र पर सूनने उठते थे। उनके बुड़े बड़े नामों में विद्वान उभार था, तिन्नी किस्मत स्थान थी, इसे यथा महानार की निरान अग्निविठा मे फट सकने में आसपास थी। " महान स्थान-वैव मूढ़ में मौजून जो दर्शन के सामग्री पर संक्षिप्त विज्ञान का आकर्षणक चित्र प्रभुता तिखा गया है। ऐसे ही पाठक के प्राकृतिक व सुंदर शब्द-चित्र और रोचक, चिन्ही सूची चार्ट-चित्रण में प्रभुता का एक "दिशा " " आत्मा नीळणा " और " कार्य नीळण " में विश्वास है जो उनके मापा-सामाय हो दिखाई देते है।

पाठक के शब्द-चित्र के साथ उनके प्रमात्मक चित्र भी एक

(1) मूर्ति का ठीकरा, पृष्ठ 16)
बोर कृति में रस-पुष्पक के कार्य करते हैं, तो दूसरे बोर माडा-वृंदक को
ब्याप्तित करते हैं। " काथ मेनम " में राजा-शुभार कन्न जेन की अन शक्ति में
रक्षिता के लौंदर का प्रमाणपत्र दिखाना गहरा दशक्त नहीं है -- " सारी स्वा
उस नारी को देख कर स्तम्भ हो गई -- क्या ज्ञान में ते मेनका आई है?
क्या इन्द्र की रामा पृथ्वी पर उतर आई है? नारिणा वृंद छोटी है, यह सभी
देखने वाले नाम है। किन्तु इस संदर्भ में कोई स्वीकार ही तुरंत हो लगती
है, यह तो ज्ञान से पहले किसी के कल्पना में भी न था। " यहाँ राक्षिता
के भद्रकुल सौंदर्य की बनहै, अन्नवर तथा वक्षणा शक्ति के द्वारा शुरू
अभिव्यक्ति की गई है। " लाला जोगा," " दिशा " और " पुत्र " का
दोष " में मीरा, दिशा, सीमातार, केदार के चरित्र के कई प्रायोगिक विचार
प्राप्त हैं, जो माध्या के सामायिक के परिचायक हैं।

अधिनिदानित्व वसु-वर्णन और विचारण के साथ ही वाला-
वरण के निकाय में भी माध्या की सामस्या का स्थाप्त देखा गया सकता है।
दासराज केन्द्र के आर्क्स का सामना करने के रूपी प्रजना के हुए वाला है। पर
पीपुल-पान का चित्र एक जड़ूँ पशवर के शब्दों में ही ध्यान है -- " मैं दिन
पर उस तार में है। काल के शतांग शतांग है। धारी त्वरण हाथ में केकर, राज-
पुर ने में पुत्र को लाया वेदिक में हरक देख है।। नेता पुत्र केन्द्र के शहर ने
प्रजात कहने दार्शन ज्ञाना, और सल्ला, पुष्पोहित में दिये राज वाल के दृष्टि से
संपूर्ण उत्साहारण कर, वाल के बाल का मोक्ष कर, पंच-पाठ द्वारा राजने देखता
का अस्तित्व अर्जित। महायोगबहुमत गौर और कृष्णा वर्ण दार्शन को
भर में चेतन शुष्कार होने का पराक्रम करेगा। शहर शहर के प्रजाय हुक के कार्यता
यज्ञा नेता पुत्र काम करेगा। हाय, इसले तो यह प्रमण वन दीव्य जीवी होता

काथ मेनम, पृ 142
तो जन्मा होता। "यहाँ क्रृष्ण के आग्रह में लत्सुगीन दुश्मन एवं शोक राजनीति, तथा उसके सम्बन्धित वर्ग की कैदियाँ प्रतिष्ठा का नाम चित्र सहनित होता है।

२ शैवी के वैदिक का शुरू के उत्तरार्ध के में यागदान।

उपयुक्त विवेचन में प्रस्तुत वर्ग के ऐतिहासिक अपनाया है। उद्धृत गद्य कों में कार्नाभम के कालियाँ उदाहरण विश्वास है। अपनाया के विषय में प्रस्तुत परम्परा पर कहा क्या है, केवल है, परंतु केवल होना चाहिए; आदि कब्ज़ा के सम्बन्ध में बाकी मयाविक वर्णाश्रम के रूप में कहता है। प्रस्तुत वर्ग के ऐतिहासिक अपनाया है। अवैध निर्दिष्ट ज्ञातार्थ इसका कुल प्रयोग होता है। इसी प्रकार क्षयकाल में सहन क्षिप्रान्तक्रोण और रौचक की जैसे के लिए नासाभास्क शैवी का अध्ययन करता है। प्रस्तुत कहानी के "वरिष्ठ-विष्णु" और "क्षेत्रकर" के विवेचन में नासाभास्क शैवी के कालियाँ उद्धा, कथा, और विवेचन इसके सच्चे प्रयोग के परिणामक है।

उपयुक्त दोनों हैं। है। के अतिरिक्त प्रस्तुत वर्ग के अपनाया है। विवेचनाश्रम के शैवी के में संदर्भ प्रयोग दिलाई देते हैं। अपने संबंध की दर्शन दशा पर जाके शहरके लक्ष्य की दिशा के अन्तर्गत स का विवेचना यहाँ उल्लेखनीय है - "बौद्ध भ्रमण कहते हैं - समुप अपने कर्म से ही हुआ पाता है, परंतु मेरे मने का क्या करता है? अपनी ऊंची उत्पन्न हो हुआ है। उत्पन्न होने है पूरी ही मेरा कर्म के पूरा पुष्ट पयाम? वह यह मेरी नहीं नानता कि मेरा कर्म का दंड मोह रहता है। है देखता, अपना अपराध या दुस्कर्म जाने

५ विद्याभ, पृष्ठ १४
विना मह अन्यों भागक दुःखमें ते बकने का कैसे निरक्ष करे। आदि दुःखमें
भी किया है, वो दंड और मौष के विषे प्रस्तुत है। नेरा पुत्र क्यों सुधा
पीत न हो? "। यहाँ स्त्रीराधो सिद्ध की दातण्य अवभाष पर दिव्या
के जाकुद दुलिया का मर्मकपर्वित विशेषण प्रस्तुत किया गया है। इसी प्रकार
"युद्ध" का ठीला "धन के सम्पत्ति में विषयवाच्य का नवींकिन्दक " काश
मैरू " में भरु राज और कुलदेश जैसे नीले शूरुः के सामने स्थवाने को
अपने पिता की अनुस्थिति भरपूरि पात्र सीहानी लेखार का, तथा नक्त-
कीर्तन के खारांत भी भा के निधन पर मीरा "नी" विशेषण इसमैने हेलें
उदाहरण है। अन्यत्र भी ऐसे सभी उदाहरण कुलदेश में विचारण है।

प्रस्तुत वर्ण के अभागदक के पान, उनका चरित्र और
परिकृत उनके समृद्ध काल की प्रतीति का एकत्र है, ही तरह के इक्वोल अभागदक
में प्राचीन काल की शेषदारी का प्रमाण किया गया है। "दिव्या" "
और "युद्ध" का ठीला " में इसमैन हुक प्रमाण हुआ है। भी यहाँ
लो पाठकों की दुर्दिमान के विषे कृति के वंदन में उनके शेषदारियः भी दिये हैं।
"
काश मैरू " में और "लाख योग्य " में भी कृति के सुगा की आववण
शेषदारी के प्रमाण किया गया है। उदाहरण के लिये "काश मैरू "
में भी आचारण में अभागदक में प्रमुख प्राचीन तद्नव शेषों के साम हो कोष में
उनके अर्थ दे दिये हैं। - भौतिक (सामान्या लंबवत्), व्यास (स्त्रेपभ) वारिकु
(व्यासी काश्मीर), काश्मीर (नागान), वालय (वालपा की
व्यक्ति), स्थानिक (तामाम नक्तमा) आदि।

इस प्रकार प्रस्तुत वर्ण के उपन्यासों में भी माता पात्र
और पारंपरिकता के अनुप्रयोग बदल्य हुआ, अपने सारे और समृद्ध व्य, शैखी

"दिव्या, पृ १२१"
वैविध्य, अत्याबाह्य-प्राॅगो और युगीन झन्दाकी के साथ अपने धामन्य का परिचय देती है मै वृद्धि एवं कृतिकार के गोर्स की अभिमुख दिखाती है।

उदेश्य और जीवन दृष्टि:

ऐतिहासिक उपन्यासों के विविध उदेश्यों का उल्लेख हम पूर्वकाली (पूर्व) अवधार में प्रस्तुत कर जाते हैं। प्रस्तुत अवधार के उपन्यासों में केवल दुर्वारा अपगुप्त उदेश्य के अभाव कर हम उन्हें निम्नांतरत रूप में रख सकते हैं।

1. अत्याबाह्य के प्राकृत प्रावृत्ति और उससे सुर युग: संस्थापन करने वाले अंत्यायाधिकार
2. अत्याबाह्य की आधुनिक व्यास्था और उसके दुर्वारा कृतिकार वृद्धिकारण का अभिमुख वाला अंत्यायाधिकार

"नाषा नागण " और " कठ मैर्ल " दोनों प्रथम कौटि के उदेश्य को लें तो हुए हैं। "नाषा नागण " में नीरा के जीवन समस्त तथ्यों में प्राकृतिक स्वभाव के अंतरण उसके सम्बन्धित लायकों का संल्पन कर उसके रूपसाधन को स्फिरित करना कृतिकार का उदेश्य है। वृद्धि के उद्देश्य के विवेक के आभार पर यह नहीं जाता है कि वृद्धि के अंत्याधिकार में स्थान रहा है। इसके लाव यही नीरा के हृदयीकार नागर भाग-भागना के संस्कार में युग के प्रस्तुतिकरण भाग के नीरा-दर्जन की भी सम्पूर्ण अभिमुख दिखाती है।

- (1) काव्य का पाप इत्तियमालिक है,
- भक्त का इत्तियमालिक,
- (2) वासना-वृत्ति के पशुसाठ काव्य का तन फंग पाप विविल हो जाता है। भक्त की वासना में युक्त नहीं, उसके आन्दोल की धीमी नहीं है। विद्यानुसार का आन्दोल कृत्य के साथ लादालय खाली है। नारे के समस्त शुद्धाधिकार और चर्चाकारण के साथ भक्ति का अमलय अन्वरत अमुक नहीं हो उसकी प्राप्ति का एक मार्ग है। " " यहाँ प्रस्त विविध नारें "

वाला नागण, पृ १०१
के प्रस्थान के अतिरिक्त भले के लिये आवश्यक लौकिक व्यवहार की दिशा भी
हेजित कर दी गई है।

"काठ मैरव" में देशा सोम पहुँचे तब तकी प्रदेश में
प्रचलित लौकिक नृशुशित के अधार पर कन्ख ध्वनि और नाग की विवृति होने वाली
पापा की सार्थिलिक अभिम्युक्ति दासा जी वायुक्त के सम्पूर्ण रचना चाहिया है।
कृपा की लौकिक प्रकृति और उपलब्ध चित्रकला से यह स्पष्ट है कि देश के अपने
उद्देश्य में सफल रहा है। इसके साथ ही देश का कन्ख ध्वनि और नाग के माध्यम
से यदि और अन्ध मुद्रिता के संपर्क द्वारा पाठकों के साथ मैं यह विचार प्रस्तुत
करता है कि मानस का क्षेमयादान द्वारा विचारों के अनुसार जीवन-यापन का
कृपया पाठ में है।

हिन्दी में "दिस्ता" और "सुदी" का टीका "दिस्तीब
प्रकर के उद्देश्य से शुरू है। "दिस्ता" में भी वश्यान अपने वास्तवादी
दृष्टिकोण से व्याधिकारी सागर की पृष्ठभूमि पर "व्यक्ति" और समाज की
प्रकृति और गांठ का चित्र "पाठकों के सम्पूर्ण प्रस्तुत करना चाहिया है। इसके
सूत्र में वास्तवादी यथा की अन्य स्त्रीविधि के मार्गित ही करता है। "जीवन
की प्रकृति प्रकर और समाजदर्श शब्द है। "दीस्तीब" अनुसार वास्तवादी क्षेत्र
की दिस्ता के उद्देश्य-पत्र के यथार्थ प्रारंभ से पार तक हां अपनी
यथा-साधन में सफल रहता है। डा. रामचंद्र रामचंद "इन्दिरा" में
धन और अधिकार का यथा तुड़ाना का पूर्व झगडा मानने है। उनका कहने
है - "न ही है, न है। धन दुरी वस्तु है, अधिकार दृष्टि का
वस्तु है। धन और अधिकार की तीन कर दो, फिर संग्रह में कुछ भी दुरा
* दिस्ता, प. १५
हिंदी और गुजराती के कल्पना-ध्वज ऐतिहासिक उपन्यासों
में से "विद्यम" , "मुद्रा का ठोड़ा" और "काढ-मैरव" में प्राचीन
भारतीय परिवेश की कल्पना के आधार पर व्याख्या का स्थानन्न विषय भया है,
जब कि "लाया-नोपण" में सौंदर्य स्तायी के अर्थात् कला की भीमा
की जीवन गाथा प्रस्तुत है। प्रथम दो उपन्यासों में समाजवादी दृष्टिकोण से
अपने सिद्धांतों की स्थापना की परंपरा है। "काछ मैरव" स्पष्टी नीति
है सम्बन्धित प्रस्ताव-न्याय है। "विद्यम" और "काछ मैरव" का स्थापना
सौंदर्य और सुभाषित है, "मुद्रा का ठोड़ा" और "लाया-नोपण" का
विश्वसुल वाणिज्य के कारण कई स्थानों पर शौर्य-दुःख।

"विद्यम" और "मुद्रा का ठोड़ा" के पात्र और उनका
वास्तविक विचार समाजवादी दृष्टिकोण के अनुसार समस्त सामाजिक नीति को
व्याप्त करने वाले सौंदर्य और सौंदर्य वर्ण की विशेषताएं के स्वरूप है।
गुजराती के ऐतिहासिक उपन्यासों के पात्र अपने जीवन के समन्वय अंश को ही
प्रस्तुत करते हैं।

हिंदी के कल्पना-ध्वज अन्यायों में खेलकों ने अपने
सिद्धांत-प्रतिमान की दृष्टि से वातावरण का निर्माण किया है। सामाजिक
वर्ण और क्लिष्ट वर्ण अपने धन और राजकार का वापस अपने कुलाम और धन-वृद्धि
सामस्या
" मुद्रा का ठोड़ा, पृष्ठ १२५"
के लिए कहता है। अतः इसके उत्पन्न प्रज्ञा के श्रोणि और उत्पीड़न की विधालयों का इसमें जीवन्त विलाय दुर्विष्ट होता है। गुजराती के अन्याय के आँसू "लाला-अधिक " में अपने छाये के अनुष्ठान दीर्घ की कृत्य-भक्ति का एवं "कांस्य-मार्व " में अधिक-उपासना और शुभ्री-धुर्रध का वातावरण निर्धारित है।

इस कार्य के हिन्दी और गुजराती के अन्याय के आँसू "लाला-अधिक " में, भवि कि नामाभिव्यक्ति के इतने है, कविता का अपने छाया के अनुष्ठान क्षेत्र, पान, तथा बातचीत के स्तर में उन्मुक्त प्रयोग किया गया है।

हिंदी उद्धृत और नीलम संबंधित विनिमयक के प्रमाण आदर है। प्रसन्न वर्ण ने हिन्दी के ऐतिहासिक अन्याय राजनीतिक विद्वानों के प्रति होकर घूम लिया है, जब न कि गुजराती के अन्याय शुभ्र क्षेत्र उद्धृत यह है जो दूसरे उल्लेखनीय तरीक़े का है कि "दिव्या " और "मुद्र " का ठीक " में उनके मार्ग का उद्देश्य भाव-वीकन के व्यापक स्तर का प्रतिनिधित्व प्रदर्शित होता है। गुजराती के "लाला-अधिक " और "कांस्य-मार्व " के पात्र वीकन के समय पश्चात् वे को ही दृष्टि राखते हैं।

तीसरे हिंदी के ऐतिहासिक अन्याय भाषानुसार नृत्य-वीच और सामाजिक व्याख्या के बिना संगीत है। उनमें, उनके ऐतिहासिक होते हुए भी अध्यात्म वर्तमान, वर्तमान की समस्याएं, वर्तमान के प्रभाव प्रतिरूप-मूल्य होते दिखाई देते हैं। अतः उनके अलंकार की रूप-वस्तु होते पर भी पाठक उनके साथ अभिव्यक्ति अनुमान करने लगता है। गुजराती के ऐतिहासिक अन्याय भाषानुसार नृत्य-वीच और सामाजिक व्याख्या संपूर्ण नहीं है।